इकाई 2 पुराणों की विषयवस्तु एवं ऐतिहासिक सङ्कल्पना

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 पुराणों की विषयवस्तु

2.2.1 पुराणों का प्रतिपाद्य विषय

2.2.2 पुराणों में वर्णित विभिन्न विषयवस्तु

2.2.3 पुराणों की क्रमानुसार विषयवस्तु

2.3 पुराणों की ऐतिहासिक सङ्कल्पना

2.3.1 पुराणों का ऐतिहासिक महत्त्व

2.3.2 पुराणों की ऐतिहासिक सङ्कल्पना

2.4 सारांश

2.5 सन्दर्भग्रन्थ सूची

2.6 बोध प्रश्न

2. उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप…

- पुराण जैसे विशाल साहित्य के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।
- सभी अठारह पुराणों की विषयवस्तु को जान सकेंगे।
- पुराणों के ऐतिहासिक महत्त्व को समझेंगे।
- पुराणों की ऐतिहासिक महत्ता और सङ्कल्पना को अच्छे से समझ पायेंगे।
- अठारह पुराणों का महत्त्व जान पायेंगे।

2.1 प्रस्तावना

प्रिय छात्रों। पुराण की इस इकाई में हम सभी पुराणों की विषयवस्तु को सामान्य तथा विस्तृत रूप से जानेंगे। तथा पुराणों के ऐतिहासिक महत्त्व को समझेंगे। सभी अठारह पुराणों में विविध सामग्री हमको प्राप्त होती है, पुराणों को वेदों के समान ही परमात्मा के निःश्वास से निर्गत बताया गया है[1]। आचार्य मधुसूदन सरस्वती, पुराणोत्पत्ति प्रसङ्ग में कहते हैं – **'विश्वसृष्टेरितिहासः पुराणम्'** अर्थात् विश्व सृष्टि के इतिहास को पुराण कहते हैं। सभी पुराणों में धार्मिक, ऐतिहासिक, राजनैतिक, भौगोलिक, वैज्ञानिक, सामाजिक और शास्त्रीय विषय भरपूर मात्रा में

[1] अस्य महतो भूतस्य निःश्वसितमेतद् यदृग्वेदो यजुर्वेदः सामवेदोऽथर्वाङ्गिरसः इतिहासः पुराणम्; (२/४/१०)

प्राप्त होता है। इन पुराणों से हमको अपने सनातन धर्म के विषय में, देवी-देवताओं के विषय में तथा अवतरावाद के विषय में पर्याप्त तथा विस्तृत प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। पुराण शब्द का योगार्थ (व्युत्पत्त्यर्थ) भी यही कहता है कि जो प्राचीन घटनाओं के विषय में जानकारी दे उस साहित्यिक ग्रन्थ को पुराण कहते हैं। एवं सायण कहते हैं जो संसार की उत्पत्ति और विकासक्रम को बताए उसे पुराण कहते हैं[2]। इसलिए पुराण को आचर्यों द्वारा इतिहास वेद (पञ्चमवेद) भी कहा गया है। यह पुराण लौकिक ज्ञान के चक्षु तथा दर्पण हैं। और ऐतिहासिक विषयवस्तु के लिए पुराण सागर के समान है अतः इनकी विषयवस्तु के विषय में कहा गया है – **'पुराणं पञ्चलक्षणम्'**[3] अर्थात् पुराण पञ्चलक्षणात्मक (सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित) है। पुराणों का मुख्य प्रतिपाद्य विषय सृष्टि है और बाकी विषय राजवंश वर्णन, देववंश वर्णन और ऋषिवंश वर्णन, मन्वन्तर वर्णन तथा सभी प्रकार का लोकोपयोगी विषय भी पुराणों में भरपूर मिलता है। इस हिस्से में हम सभी पुराणों की क्रमानुसार विषयवस्तु तथा ऐतिहासिक सङ्कल्पना को जानेंगे।

2.2 पुराणों की विषयवस्तु

2.2.1 पुराणों का प्रतिपाद्य विषय

पुराणों के पाँच लक्षणों से पुराणों का प्रतिपाद्य विषय स्पष्ट ही है परन्तु इसके साथ-साथ पुराणों में भिन्न-भिन्न तीर्थों का वर्णन, उपासना कर्म, प्रायश्चित्त कर्म, निषिद्ध कर्म, कर्त्तव्याकर्त्तव्य इत्यादि का विशद वर्णन प्राप्त होता है। पुराणों में ऐतिहासिक घटना क्रम नन्द, मौर्य, शुंग, आन्ध्र और गुप्त आदि सूर्यवंशी एवं चन्द्रवंशी राजाओं का वर्णन विस्तृत रूप में प्राप्त होता है। मूर्तिपूजा, सगुण ब्रह्म की उपासना तथा व्रत उपासना के विषय में भी भरपूर सामग्री प्राप्त होती है। दार्शनिक तत्त्वों का चिन्तन भी पुराणों में भरपूर प्राप्त होता है। पुराणों में भूगोल का ज्ञान भी विस्तृत रूप में प्राप्त होता है। श्रुतिप्रमाण्य होने के कारण में वेदगत शिक्षा को ही पुराणों में सरल एवं विस्तृत तरीके से बताया गया है। पुराणों को सरल भाषा में धर्मप्रतिपादक कहा गया है। पुराण मानव जाति के आचार-नियम/कायदा-कानून का भी प्रतिपादन करते हैं, इन पुराणों में विभिन्न कथा-कहानियों के माध्यम से बताया गया है कि किस प्रकार मनुष्य को प्रकृति के साथ व्यवहार करना चाहिए एवं किस प्रकार अपने मन सांसारिक क्रियाओं से निवृत्त होकर मोक्षानुगामी बनाना चाहिए। पुराण हमारे वैदिक सनातन धर्म के चक्षु हैं जिनसे हमको आचार व्यवहार के साथ-साथ अपनी संस्कृति का भी ज्ञान होता है।

2.2.2 पुराणों में वर्णित विभिन्न विषयवस्तु

पुराणों में वर्णित विषयवस्तु की बात करें तो इस प्रकार से विभाग करके समझ सकते हैं –

१. **आध्यात्मिक विषयवस्तु** – पुराणों की विषयवस्तु हमको आध्यत्मिक चिन्तन का भी अनुसरण कराती है। जिसका एक रूप पुराणों में वर्णित अवतारवाद देखा जा सकता है, जिससे मनुष्य भक्ति मार्ग को अपना कर आध्यात्म के साथ जुडता है। पुराणों में ऐसी सेंकडों घटनाएँ हैं जिनसे मनुष्य आध्यात्म की शिक्षा अच्छे ढंग से ले सकता है। अनेकानेक रूप से देवस्तुतियाँ पुराणों मे दृष्टिगोचर होती हैं तथा व्रत-उपवासों का भी

[2] जगतः प्रागवस्थामनुक्रम्य सर्गप्रतिपादकं वाक्यजातं पुराणम्; (ऐतरेयब्राह्मणभाष्य भूमिका)

[3] अमरकोश (१/६/५)

वर्णन पुराणों मे प्राप्त होता है जो आध्यात्म के स्वरूप का ही अङ्ग है। इस प्रकार से पुराणों में आध्यात्मिक विषयवस्तु की प्रचुरता है।

२. **ऐतिहासिक सामग्री** – विद्वानों ने पुराण और इतिहास को पर्याय ही कहा है[4]। और पुराणों के पाँच लक्षणों से भी स्पष्ट है कि सभी पुराणों में सम्पर्ण विश्व का इतिवृत्त भरपूर मात्रा में मिलता है जैसे वंश एवं वंशानुचरित के अन्तर्गत प्राचीन काल के ऋषियों और राजाओं का वर्णन पुराणों विस्तार से बताया गया है।

३. **भौगोलिक सामग्री** – बहुत से ऐसे पुराण है जिनमें समस्त पृथ्वी की भौगोलिक संरचना को बताया गया है जैसे विष्णु पुराण में सात द्वीप, सात सागर, सात नदीयाँ, सात पर्वत तथा भिन्न-भिन्न तीर्थस्थलों के विषय में बताया गया है। पुराणों में 'भुवनकोश' के अन्तर्गत समस्त भूमण्डल का वर्णन किया गया है।

४. **राजनैतिक सामग्री** – पुराणों में बहुत से राजवंशो का वर्णन है तथा उनके काल से सम्बन्धित सामाजिक संरचना को भी बताया गया है, जिससे हम लोग भिन्न-भिन्न काल की राजनैतिक दशा को भी समझ सकते हैं।

५. **दार्शनिक सामग्री** – पुराणों में ऐसे बहुत से दार्शनिक आख्यान हैं जिनसे हमको दार्शनिक चिन्तन की दिशा प्राप्त होती है। सृष्टि प्रक्रिया तथा उसका प्रलय पुराणों में भिन्न-भिन्न रूप दर्शाय गया है तथा प्राचीन दार्शनिक सिद्धान्तों के बीज भी पुराणों मे प्राप्त होते हैं।

६. **धार्मिक सामग्री** – पुराणों में धर्म की अनेक रूप में चर्चा की गई है। अवतारवाद में भिन्न-भिन्न देवी देवताओं की उपासना को धर्म से जोडकर श्रद्धा और भक्ति पर बल दिया गया है। वैदिक धर्म को भी कथा-कहानियों के माध्यम से सरल करके बताया गया है।

७. **आचार-नियम विषयक सामग्री** – पुराणों में कर्तव्याकर्तव्य को कथा-कहानियों के माध्यम से सरल भाषा और मानव जाति से जोडकर बताया गया है। पाप-पुण्य का सहारा लेकर नैतिकता को भी समझाया गया है। दान-दया-सेवा-निष्ठा इत्यादि को पुराणों में मानव के नैतिक गुण के रूप में दिखाया गया है।

८. **ज्ञान-विज्ञान की सामग्री** – पुराणों की समस्त विषयवस्तु वैसे तो ज्ञान-विज्ञान का ही प्रदर्शन करती है परन्तु विशेष रूप से पुराणों दस विद्याओं को भी बताया गया है। जैसे अग्नि पुराण में काव्यशास्त्र, छन्दशास्त्र, ज्योतिषशास्त्र और व्याकरणशास्त्र के तत्त्वों का चिन्तन विस्तृत रूप से प्राप्त होता है। इस प्रकार से पुराणों में शास्त्रीय और वैज्ञानिक दोनों विषयों का सङ्कलन प्राप्त होता है।

इस प्रकार से पुराणों में विविध विषयों को संग्रह है जो लौकिक रूप में बताया गया है। यह सभी विषय मानवजाति के लिए अमृततुल्य हैं।

2.2.2 पुराणों की क्रमानुसार विषयवस्तु

महापुराणों का क्रम श्रीमद्भागवत पुराण[5] में दिया गया है उसी क्रम के अनुसार यहाँ पुराणों की

[4] इतिहासः पुरावृत्तम् (अमरकोश १.५.४);/ पुराणं पुरावृत्तम् (महाभारत नीलकण्ठी टीका १.५.१);
[5] भागवतपुराण (१२/७/२३-२४);

विषयवस्तु का संक्षिप्त परिचय दिया जा रहा है –

1) **ब्रह्मपुराण** – सभी अठारह पुराणों में ब्रह्मपुराण को सर्वप्रथम रखा गया है इसलिए इसको 'आदिपुराण' भी कहा जाता है। इस पुराण की श्लोक संख्या दसहजार कहीं गई है[6]। परन्तु बम्बई से प्रकाशित संस्करण में १३,७८७ श्लोक प्राप्त होते हैं[7]। सबसे पहले मनुष्य यह सोचता है कि वह कौन है? इस सृष्टि की रचना किसने की है? इन सभी प्रश्नों का उत्तर 'ब्रह्मपुराण' में दिया गया है कि इस समस्त प्रपञ्च रचना के कर्ता स्वयं ब्रह्मा हैं। ब्रह्मा के स्वरूप का पूर्ण वर्णन इस पुराण में प्राप्त होता है अतः इस पुराण को 'ब्रह्मपुराण' की संज्ञा दी जाती है। ब्रह्मपुराण की रचना के विषय में यह मान्यता है कि सर्वप्रथम ब्रह्मा जी इसी पुराण का प्रणयन किया था। नैमिषारण्य में एकत्र सभी ऋषि-महर्षियों को लोमहर्षण ने इस पुराण का प्रवचन किया था। इस पुराण के परिशिष्ट भाग में कोर्णाक के सूर्य मन्दिर का उल्लेख प्राप्त होता है। इस पुराण में जगत् सृष्टि, मनु वंश वर्णन, सभी देवयोनियों का वर्णन, राजवंशों का वर्णन, जीववर्णन, भूमण्डल वर्णन, स्वर्ग एवं नरक वर्णन, दक्ष यज्ञ वर्णन, सप्तलोक वर्णन, भारतखण्ड की प्रशंसा और उसके अन्तर्गत देशों का वर्णन तथा अन्यान्य उपविषय भी विस्तार से वर्णित हैं। इस पुराण में उडीसा देश के तीर्थों का वर्णन तथा उस क्षेत्र में होने वाली सूर्य पूजा का विशेष वर्णन है तथा गौतमी गङ्गा (वर्तमान गोदावरी नदी) का सविस्तार वर्णन है। विष्णु के अवतार को बताया गया है। सूर्यवंश का विस्तृत वर्णन इस पुराण में प्राप्त होता है। इस पुराण में भिन्न-भिन्न आख्यानोपाख्यान भी प्राप्त होते हैं जैसे – हरिश्चन्द्रोपाख्यान, दक्षोपाख्यान, दुष्यन्त-शकुन्तलोपाख्यान, सगर के पुत्रों का आख्यान आदि। इस पुराण में त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की भक्ति तथा पूजा का विशेष वर्णन है। इस पुराण में कहा गया है कि धर्म देश और काल के अधीन होता है – **'तस्याऽऽश्रयश्च द्विविधो देशः कालश्च सर्वदा'**[8]। ब्रह्मपुराण में धर्म की महत्ता सर्वत्र वर्णित है। इसमें कहा गया है कि धर्म से ही अर्थ, काम और मोक्ष की सिद्धि होती है[9]। इस पुराण का प्रतिपादन संवाद शैली में सरल ढंग से किया गया है, जिससे अर्थावबोध में कठिनाई नहीं होती।

2) **पद्मपुराण** – पुराणों के क्रम में द्वितीय पुराण पद्मपुराण आता है। इस पुराण का विभाजन पद्मपुराण, मत्स्य तथा नारदीय विषयानुक्रमणी के अनुसार ५५००० श्लोकों में किया गया है। यह वैष्णव पुराण है। इस पुराण में विष्णु के महात्म्य का विशद वर्णन है। इस पुराण में राम अवतार, कृष्ण अवतार, अयोध्या महात्म्य, वृन्दावन महात्म्य, शालग्राम पूजन इत्यादि विषय वर्णित है। पद्मपुराण के बंगाली संस्करण में इसके पाँच खण्डों को बताया गया है[10] - १. सृष्टि २. भूमि ३. स्वर्ग ४. पाताल ५. उत्तर। भूमि खण्ड में आख्यानों की बहुलता है। इस पुराण में सृष्ट्युत्पत्ति, भारतवर्ष वर्णन, नर्मदा नदी महात्म्य, कालिन्दी (यमुना नदी) महात्म्य, वाराणसी-गया एवं अन्य तीर्थ महात्म्य, पितृभक्ति महात्म्य, कार्तिक मास महात्म्य, वैशाख मास महात्म्य, माघ मास महात्म्य, सुबाहु चरित, वाल्मीकि आश्रम की कथा, समुद्र मन्थन की कथा, हिरण्याकशिपु वध, चातुर्मास्य व्रत, गीता महात्म्य एवं भागवत महात्म्य इत्यादि विषय विस्तृत रूप में निरूपित हैं। अगर

[6] श्रीमद्भागवतपुराण (१२.१३.०४);

[7] उमाशङ्कर ऋषि : संस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ. १८०

[8] ब्रह्मपुराण गौतमी महात्म्य (१०५.१८)

[9] धर्मादर्थस्तथा कामो मोक्षश्च परिकीर्त्यते। (ब्रह्मपुराण १०७.७३)

[10] पद्म. भूमि (१२५.४८-४९)

सामान्य भाषा में कहा जाए तो इसमें विष्णु से सम्बन्धित सामग्री का आधिक्य है। इस पुराण में विष्णु की भक्ति पर विशेष जोर दिया गया है अनेक आख्यान और उपाख्यानों के माध्यम से विष्णु के महात्म्य को दर्शाया गया है।

3) **विष्णुपुराण** – पुराणों के क्रम में तृतीय स्थान विष्णु पुराण का है। इस पुराण के वक्ता विष्णु हैं इसलिए इसका नाम विष्णुपुराण है, परन्तु इसी पुराण में इसके प्रवक्ता पाराशर तथा श्रोता मैत्रेय कहे गए हैं। यह पुराण ६ अंशों में विभक्त है। इस पुराण में विष्णु और वैष्णव धर्म सम्बन्धी सामग्री की प्रचुरता है। इस पुराण के प्रथम अंश में देवादयों का जन्म, समुद्र मन्थन की कथा, दक्ष वंश वर्णन, ध्रुवचरित एवं प्रह्लाद आदि की कथा का वर्णन है। द्वितीय अंश में प्रियव्रत आख्यान, नरक वर्णन, सप्तस्वर्ग वर्णन, सूर्य की गति का वर्णन, मुक्ति मार्ग आदि का वर्णन है। तृतीय अंश में मन्वन्तर वर्णन, वेदव्यास कथा, सगर संवाद, श्राद्धकल्प वर्णन, सर्वधर्म निरूपण और मायामोह कथा का वर्णन है। चतुर्थ अंश में सूर्य वंश की कथा, सोम वंश की कथा तथा भविष्य में होने वाले राजाओं के विषय में भी बताया गया है। पञ्चम अंश में कृष्ण लीला तथा अष्टावक्र आख्यान का वर्णन है। षष्ठांश में चतुर्विधप्रलय वर्णन है। इस पुराण का उत्तरभाग (द्वितीय भाग) विष्णुधर्मोत्तर पुराण है। जो कि विषयवस्तु की दृष्टि से अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसमें व्रत, नियम, योग, साहित्य, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, वेदान्त, ज्योतिष, वंश वर्णन आदि विषय वर्णित हैं। विषयवस्तु की दृष्टि से पुराण के पाँच लक्षण इसी में पूर्णरूप से प्राप्त होते हैं। इस पुराण में महाजनपद काल के नन्द वंश, मौर्य वंश और शुङ्गादि वंशो का वर्णन भी प्राप्त होता है। इस पुराण का भौगोलिक दृष्टि से अत्यधिक महत्त्व है इस पुराण में पृथ्वी के सात द्वीप तथा उनके राजाओं का वर्णन है, नदियों, पर्वतों और तर्थों का भी वर्णन इस पुराण में प्राप्त होता है। इस पुराण में गद्यांश भी प्राप्त होता है जो गद्य की प्राचीन शैली का ज्ञान कराता है। इस पुराण का अनुवाद बहुत सी भाषाओं में हुआ है। इस पुराण का हिन्दी अनुवाद गीता प्रेस गोरखपुर से प्रकाशित है। यह विष्णु पुराण भागवत पुराण से प्राचीन है।

4) **वायुपुराण** – कुछ महापुराणों में वायुपुराण के स्थान पर चौथे पुराण के रूप में शिवपुराण का नाम देखने को मिलता है[11] परन्तु शिव पुराण और वायु पुराण भिन्न-भिन्न हैं। शिव महापुराण में अठारह पुराणों को बताया गया है[12]। शिव पुराण में शैव सिद्धान्तों का वर्णन है अतः यह शैवदर्शनों एवं मतों का आकर (भाष्य) ग्रन्थ है। इस पुराण में सृष्टिक्रम, भौगोलिक वर्णन, अन्तरिक्ष विज्ञान, तीर्थ वर्णन, ऋषियों का वर्णन, गान विद्या, प्रजापतिवंश वर्णन, दान का फल, सप्त ऋषि वर्णन तथा शिवभक्ति का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। इस पुराण में पितरों और श्राद्ध का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। पाशुपत दर्शन, प्रत्यभिज्ञा दर्शन, शैव सिद्धान्त इस पुराण में पर्याप्त मिलते हैं। वायु पुराण की लोकप्रियता बाणभट्ट की उक्तियों से प्रतीत होती है।

5) **लिङ्गपुराण** – यह पुराण शिव के चतुर्वेदमय स्वरूप को प्रकाशित करता है। इस पुराण की मुख्य विषयवस्तु शिवोपासना है। इस पुराण में कहा गया है कि जिसका कोई लिङ्ग और चिह्न नहीं है उसको निर्गुण और अलिङ्ग कहा जाता है। और यही परमात्मा अव्यक्त प्रकृति (लिङ्ग) का मूल है – **"अलिङ्गो लिङ्गमूलं तु अव्यक्तं लिङ्गमुच्यते। अलिङ्गः शिव इत्युक्तो लिङ्गं शिवमिति स्मृतम्"॥** शिवपुराण के अनुसार लिङ्ग

[11] देवीभागवत (१/३), मत्स्य (अध्याय ५३), नारद (पूर्वखण्ड अध्याय ९५);

[12] दशधा चाष्टधा चैतत्पुराणमुपदिश्यते। (शिवपुराण ७/१/१/४२);

चरित के वर्णन के कारण इस पुराण को लिङ्गपुराण कहा गया है। इस पुराण में ८०२५ श्लोक हैं। इस पुराण में शिव से ही सृष्टि का आरम्भ कहा गया है। एवं इस पुराण में शिव के अठ्ठाईस अवतारों के विषय में बताया गया है। इस पुराण में शंकर रहस्य, योग का वर्णन, शिव साक्षात्कार, शिवशक्ति, वामदेव महात्म्य, लिङ्गार्चन, श्वेतमुनि आख्यान, इन्द्र द्वारा शिव भक्ति वर्णन, भौगलिक वर्णन, त्रिपुरदहन का वर्णन, शिवपूजा महात्म्य, शिवलिङ्गों का वर्णन, पाशुपतव्रत महात्म्य, तीर्थ वर्णन, शिव सहस्रनाम आदि का वर्णन प्राप्त होता है। इस पुराण के उत्तरार्ध में नारायण महिमा, विष्णु महात्म्य, वैष्णव दर्शन, द्वादशाक्षर और अष्टाक्षर महात्म्य आदि का विशद वर्णन है। इसमें अनेक स्थलों पर शिव को विष्णु से श्रेष्ठ बताया गया है। इस पुराण में ध्रुवाख्यान, ययाति आख्यान, अम्बरीष-श्रीमति आख्यान, श्वेतमुनि आदि आख्यान वर्णित हैं। इस पुराण में धर्मशास्त्रीय सम्बन्धी विचार भी प्राप्त होते हैं।

6) **गरुडपुराण** – यह वैष्णव पुराण है। इस पुराण को विद्वान् विश्वकोष की संज्ञा प्रदान करते हैं। इस पुराण का परिमाण १८००० श्लोकों में है। इस पुराण को भगवान विष्णु ने गरुड को सुनाया था, फिर गरूड ने कश्यप को सुनाया था, कश्यप ने व्यास को, व्यास ने शौनक को सुनाया था। तात्कालिक समाज की सामाजिक, धार्मिक, साहित्यिक तथा आर्थिक स्थिति के सम्यक् ज्ञान के लिए यह पुराण अत्यन्त उपयोगी है[13]। इस पुराण में त्रिदेव उत्पत्ति, नारायण अवतार वर्णन, चतुर्विध प्रजा की उत्पत्ति, सृष्टि वर्णन, सूर्यपूजा, नवव्यूहार्चन विधान, भुक्तिमुक्तिप्रदाता योग का वर्णन, विष्णुसहस्रनाम तथा महात्म्य, शिव पूजा वर्णन, शक्तिवर्णन, योग वर्णन, वास्तुदर्शन, चारवर्णों का वर्णन, दान, प्रायश्चित्त, सप्तद्वीप वर्णन, सप्त पर्वतों का वर्णन, सप्त पातालों का वर्णन, नरकों का विस्तृत वर्णन, तारागण का वर्णन, सामुद्रिक शास्त्र, रत्न परीक्षा, तीर्थ महात्म्य, मन्वन्तर आख्यान, श्राद्ध वर्णन आदि विषय सविस्तार बताए गए हैं। इस पुराण को दो खण्डों में विभाजित किया गया है। जिसके उत्तरखण्ड को प्रेतकल्प कहा जाता है इसमें मृत्यु, प्रेतमुक्ति, यमलोक तथा विष्णुलोक गमन का वर्णन है। इस पुराण में अनेक लोकोक्तियाँ तथा सुभाषित प्राप्त होते हैं।

7) **नारदपुराण** – यह पुराण भी वैष्णव पुराण है। इसमें विष्णु के व्रत तथा वैष्णव धर्म का विवेचन किया गया है। एवं इसमें विविध विषयों का सङ्कलन किया गया है इसमें सभी शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त होता है। इस पुराण में २२००० श्लोक हैं। इस पुराण में नैमिषारण्य में शौनक आदि ऋषियों की तपस्या का वर्णन, दशावतार स्तुति, रुद्र एवं विष्णु की उत्पत्ति, सप्त महाद्वीपों का वर्णन, सृष्टि, गंगा महात्म्य, धर्माधर्म वर्णन, भगीरथ की तपस्या वर्णन, ध्वजारोपण की विधि, तिथियों का वर्णन, यममार्ग में आए कष्टों का वर्णन, वर्णव्यवस्था, धर्मव्यवस्था, व्याकरण शास्त्र, पाशुपत दर्शन, हनुमान उपासना पद्धति का वर्णन, शक्ति की उपासना, एकादशी महात्म्य इत्यादि का वर्णन विशद रूप में प्राप्त होता है। इस पुराण के अध्याय ८२ में राधाकृष्णसहस्रनामस्तोत्र है। इस पुराण में रामेश्वरलिङ्ग महात्म्य भी प्राप्त होता है। इस पुराण के प्रारम्भ में दशावतार वर्णन किया गया है। इस पुराण में ललितासहस्रनामस्तोत्र भी प्राप्त होता है।

8) **श्रीमद्भागवतपुराण** – इसी पुराण में पुराणों को पञ्चम वेद कहा गया है[14]। इसमें पुराणों के पाँच लक्षण बताए गए हैं। इसका विभाजन द्वादश स्कन्धों में हुआ है। यह पौराणिक

[13] संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास: बलदेव उपाध्याय (भाग – १३, पृ. १५५);

[14] इतिहासपुराणं च पञ्चमो वेद उच्यते। (भागवत १।४।२०);

साहित्य सर्वाधिक प्रचलित पुराण है। इसको भगवान कृष्ण का विग्रह माना गया है। इसको भक्तिरस का आधार माना जाता है। लोक में भागवत सप्ताह श्रवण काफी प्रचलित जो कि प्रसिद्ध बनाता है। इस कथा के वक्ता शुकदेव जी हैं और श्रोता राजा परीक्षित हैं। श्रीमद्भागवत को विद्वानों का परीक्षास्थल कहा गया है - **'विद्यावतां भागवते परीक्षा'।** इसमें विष्णु भगवान के २४ अवतारों को बताया गया है। इसमें सृष्टि वर्णन, काल गणना, दक्ष वर्णन, पृथु वंश वर्णन, पुनरञ्जनोपाख्यान, भरतचरित्र वर्णन, भुवनकोश का वर्णन, मन्वन्तर वर्णन, सूर्यवंश वर्णन, चन्द्रवंश वर्णन, वैष्णव धर्म वर्णन इत्यादि का विशद वर्णन है। इस पुराण में कृष्ण को सर्वस्व बताया गया है। उनकी लीला का वर्णन सविस्तार से किया गया है। इस पुराण का सबसे बडा भाग दशम स्कन्ध है जिसमें कृष्ण लीला का वर्णन किया गया है। इस पुराण के अन्तिम में अन्य पुराणों की श्लोक संख्या भी बताई गई है।

9) **अग्निपुराण** – इस पुराण को विद्वान् विश्वकोश कहते हैं। इस पुराण में शास्त्रीय और वैज्ञानिक दोनों प्रकार के विषय मिलते हैं। मत्स्यपुराण में कहा गया है कि 'जिस पुराण में ईशानकल्प के वृत्तान्त का आश्रय लेकर अग्नि ने वशिष्ठ के प्रति जो उपदेश दिया है उसे अग्निपुराण कहते हैं। यह तामस पुराण के अन्तर्गत आता है। अग्निपुराण में इसके श्लोकों की संख्या १५००० बताई गई है। अग्निपुराण में धर्मशास्त्रीय विषयों का विशद वर्णन है। इस पुराण में काव्यशास्त्रीय तत्त्वों की भी प्रचुरता है। इस पुराण में अवतारवाद, सृष्टि वर्णन, मन्त्र साधना, शिलाविन्यास वर्णन, देव प्रतिष्ठा, दीक्षा विधि, भुवनकोश वर्णन, तीर्थ महात्म्य, मन्वन्तर वर्णन, वर्णाश्रमधर्म, पातक और प्रायश्चित्त वर्णन, व्रत विधान, राजधर्म वर्णन, स्त्री-पुरुष के लक्षण, शकुन विचार, व्यवहार शास्त्र, वंश वर्णन, मन्त्र विज्ञान, छन्द वर्णन, एकाक्षरकोष, व्याकरणशास्त्र, अष्टाङ्गयोग, वेदान्तदर्शन इत्यादि का विशद विवेचन प्राप्त होता है। इस पुराण में परा और अपरा विद्या का भी विवेचन प्राप्त होता है।

10) **स्कन्दपुराण** – यह सभी पुराणों की अपेक्षा विशालकाय है। इस पुराण में नारदीय पुराण के अनुसार ८१००० है एवं इसका विभाजन ७ खण्डों में हुआ है – माहेश्वर खण्ड, वैष्णव खण्ड, ब्राह्म खण्ड, काशी खण्ड, आवन्त्य खण्ड, नागर खण्ड और प्रभास खण्ड। इस पुराण में अयोध्या, पुरी, रामेश्वर, कन्याकुमारी, काञ्ची, मथुरा, द्वारिका, कुरुक्षेत्र, उज्जयिनी, तीर्थों, गङ्गादि नदियों का वर्णन, व्रत वर्णन, प्रकृति पूजा वर्णन, नीतिधर्म, सदाचार, भक्ति, ज्ञान, वैराग्य आदि का वर्णन है। इसके केदार खण्ड के अन्तर्गत सती विवाह, शिव भक्ति महात्म्य, लिङ्ग पूजा प्रवृत्ति, देवासुर संग्राम, राजा बलि वर्णन, सुरतारकासुरसंग्रामवृत्तान्त, शिव-पार्वती विवाह, महाशिवरात्रि महात्म्य इत्यादि का वर्णन है। एवं अन्य खण्डों में अर्जुन की तीर्थ यात्रा, राजा प्रद्युम्न वृत्तान्त, बर्बरीतीर्थ माहात्म्य, कपिलेश्वर आख्यान, सोमनाथ माहात्म्य, केदारेश्वर माहात्म्य, अरुणाचल माहात्म्य, परमेश्वरार्चन की विधि, महिषासुर वध कथा, वैङ्कटाचल आख्यान, प्रमुख तीर्थों का वर्णन, जगन्नाथ क्षेत्र माहात्म्य, कार्तिक मास का वर्णन, जलन्धर वृत्तान्त, धनेश्वर वृत्तान्त, मार्गशीर्ष माहात्म्य, भागवत माहात्म्य, वासुदेव माहात्म्य, रामनाथलिङ्ग माहात्म्य, ध्रुवलोक वर्णन, मणिकर्णिका आख्यान, ज्ञानवापी माहात्म्य, सुलक्षणा आख्यान, वाल्मीकि चरित इत्यादि विषय प्राप्त होते हैं। इसमें इसके माहात्म्य के विषय में बताया गया है कि इसका श्रवण, पठन तथा इस पुस्तक दान देना चाहिए।

11) **भविष्यपुराण** – प्राचीन धर्मशास्त्रीय तथा नवीन ऐतिहासिक विषयों के समावेश के

कारण भविष्य पुराण का पुराण साहित्य में विशिष्ट स्थान है। भविष्य पुराण सात्त्विक पुराण के अन्तर्गत आता है। इसमें कुल ५८५ अध्याय हैं। विष्णुपुराण और भागवतपुराण के अनुसार इसको नौवाँ पुराण माना गया है। ब्रह्मा द्वारा प्रोक्त इस पुराण में पाँच पर्व हैं (ब्राह्म, वैष्णव, शैव, त्वाष्ट्र और प्रतिसर्ग पर्व), परन्तु सम्प्रति उपलब्ध भविष्यपुराण में चार ही पर्व प्राप्त होते हैं (ब्राह्म, मध्यम, प्रतिसर्ग और उत्तर)। इसमें प्राधान्येन सूर्य की उपासना तथा सूर्य की महिमा का विस्तृत विवेचन प्राप्त है। इसमें सूर्य को जगत्स्रष्टा, पालक तथा संहारक कहा गया है। मत्स्यपुराण के अनुसार भविष्य का वर्णन होने के कारण इस पुराण का नाम भविष्यपुराण है[15]। इस पुराण का वर्ण्य विषय सृष्टि वर्णन, धर्मशास्त्र, संस्कार, स्त्री लक्षण, व्रत महात्म्य, वर्ण व्यवस्था, सूर्यरथयात्रा महात्म्य, पञ्चमहायज्ञ, आचारप्रंशसा, द्वापरयुगीय राजा वंश वर्णन, काश्यपवंश वर्णन, वेताल-विक्रमसंवाद, सत्यनारायण कथ, दुर्गासप्तशती महात्म्य, राजवंश वर्णन, भुवनकोश वर्णन, व्रतवर्णन आदि है। इस पुराण से निःसृत ग्रन्थ वेतालपञ्चविंशातिका, सत्यनारायण व्रत कथा, आल्हा-उदल आख्यान और सूर्यव्रत अनुष्ठान आदि है। इस पुराण में लोकोक्तियाँ तथा सुभाषितों की भी प्रचुरता है।

12) **ब्रह्मवैवर्तपुराण** – यह वैष्णव पुराण है। इस पुराण में चार खण्ड हैं – ब्रह्मखण्ड, प्रकृतिखण्ड, गणपतिखण्ड और कृष्णजन्मखण्ड। इस पुराण में काशी का रहस्य भी बताया गया है। इस पुराण के प्रमुख प्रतिपाद्य देवता विष्णु स्वरूप श्रीकृष्ण तथा उनकी शक्ति श्रीराधा हैं। इसमें कृष्ण और राधा को एकमात्र परमसत्य बताया गया है। इस पुराण में भगवान श्रीकृष्ण को परब्रह्म परमात्मा कहा गया है[16]। इसमें प्रकृति, ब्रह्म, विष्णु और शिव आदि देवों का आविर्भाव श्रीकृष्ण से हुआ है[17]। इसके वर्ण्य विषय में परब्रह्मवर्णन, काशी माहात्म्य, सत्सङ्ग महिमा, गङ्गा महिमा, तुलसी माहात्म्य, सावित्री कथा, तारा वृत्तान्त, गणेश उत्पत्ति, कृष्णलीला इत्यादि हैं। इस पुराण में पाँच प्रकार की सृष्टि बताई गई है – राधा, दुर्गा, लक्ष्मी, सरस्वती और सावित्री। इसमें बताया गया है कि प्रकृति के बिना परब्रह्म कुछ भी नहीं कर सकता। इस पुराण में प्राधान्येन कृष्ण विवेचन किया गया है।

13) **मार्कण्डेयपुराण** – मत्स्यपुराण के अनुसार यह नवसहस्रश्लोकात्मक पुराण है। मार्कण्डेयपुराण में नरिष्यन्तचरित्र, इक्ष्वाकु, तुलसी, श्रीकृष्ण, राम, पुरुरवा, नहुष और ययाति के चरित्रों का वर्णन प्राप्त होता है। इस पुराण में सांख्यतत्त्व विवेचन भी प्राप्त होता है। इस पुराण का मुख्य प्रतिपाद्य विषय धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, मोक्षशास्त्र, हरिश्चन्द्र कथा, कार्तवीर्य कथा, मदालसा आख्यान, वैवस्वत मन्वन्तर के देवता, इन्द्र, ऋषि और प्रमुख राजवंशों का वर्णन, सूर्य महिमा इत्यादि है। इस पुराण में शक्ति स्वरूपा दुर्गासप्तसती भी प्राप्त होती है। इस पुराण में चारों वर्णों और उनके धर्म को बताया गया है। इस पुराणा की भाषा गाम्भीर्य पूर्ण है।

14) **वामनपुराण** – वामन पुराण गणना क्रम से चौदहवाँ पुराण माना गया है। सम्पूर्ण जगत् के पालक भगवान विष्णु के वामनावतार के चरित्र के चित्रण करने के कारण इस पुराण का नाम वामनपुराण है। इस पुराण की श्लोक संख्या १०,००० है तथा इसका विभाजन दो भागों में हुआ है – पूर्वभाग और उत्तरभाग। इसमें सती शरीर परित्याग वर्णन, शिव पार्वती

[15] भविष्यचरितप्रायं भविष्यं तदिहोच्यते। (मत्स्य ५३.३१);

[16] वन्दे कृष्णं गुणातीतं परमब्रह्माच्युतं यतः। (ब्र.ख. १/४);

[17] आविर्भूवुः प्रकृतिब्रह्मविष्णुशिवादयः। (ब्र.ख. १/४);

विवाह, तीर्थ महिमा, दान महिमा, भुवनकोश वर्णन, भौगोलिक वर्णन, शक्ति महिमा, विविध वाहन वर्णन प्राप्त होता है। इसके उत्तरभाग में चार संहिताएँ प्राप्त होती हैं – १. माहेश्वरी संहिता २. भागवती संहिता ३. सौरी संहिता ४. गाणेश्वरी संहिता। माहेश्वरी संहिता में श्रीकृष्ण एवं उनके भक्तों का कीर्तन है। भगवती संहिता में माँ जगदम्बा के अवतार की कथा वर्णित है। सौरी संहिता में सर्व पापनाशक भगवान् सूर्य की महिमा वर्णित है। गणेश्वरी संहिता में गणेश की महिमा वर्णित है। वामन पुराण में राजा बलि के प्रसङ्ग में वामनावतार की कथा का विशद वर्णन प्राप्त होता है। इस पुराण से ही करवाचौथ की कथा, गङ्गा की महिमा, वाराह का माहात्म्य बताने वाले ग्रन्थ निकले हैं। वामन पुराण का सांस्कृतिक, दार्शनिक एवं सामाजिक रूप से विशिष्ट महत्त्व है। इसमें कहा गया है कि देव-वेद-द्विजाति-पुराण-इतिहास-गुरु इनकी निन्दा नहीं करनी चाहिए।

15) **वाराहपुराण** – यह पुराण वैष्णव पुराण है। इस पुराण के गौडीय और दाक्षिणात्य दो संस्करण प्राप्त होते हैं। परन्तु एशियाटिक सोसाइटी कलकत्ता से प्रकाशित वाराहपुराण में १०,७०० श्लोक प्राप्त होते हैं[18]। श्रीरामानुज सम्प्रदाय के अन्तर्गत जिन विषयों तथा सिद्धान्तों की मान्यता है, वे सभी प्रायः वाराह महापुराण में प्राप्त होते हैं। इस पुराण में भगवान् विष्णु की महिमा का विशद वर्णन प्राप्त होता है। इसके पूर्व भाग में भूमि और वाराह का संवाद, श्राद्धकल्प, महातपा का आख्यान, गौरी की उत्पत्ति, सत्यतपा का व्रत, रुद्रगीता, महिषासुर वध, श्वेतोपाख्यान, व्रत, तीर्थ महिमा, मथुरा माहात्म्य, यमलोक वर्णन का माहात्म्य वर्णित है। इसके उत्तर भाग में पुलस्त्य-कुरुराज का संवाद, चातुर्मास्य माहात्म्य, भगवद्गीता माहात्म्य, विमान माहात्म्य, विष्णु माहात्म्य वर्णित है। यह एक धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ भी है इससे काफी धर्मशास्त्रीय निबन्धकारों ने श्लोक लेकर अपने ग्रन्थों में उद्धृत किए हैं। यह सात्त्विक पुराण है।

16) **मत्स्यपुराण** – इस पुराण के उपदेष्टा मत्स्य तथा मुख्य श्रोता मनु है। इस पुराण का आरम्भ मनु-मत्स्य कथा से होता है। पुराणक्रम में यह सोलहवाँ पुराण है। वामन पुराण इसे प्रधान पुराण मानता है[19]। स्कन्दपुराण के अनुसार यह शैव पुराण है। देवी भागवत में इसकी श्लोक संख्या १९००० बताई गई है। इस पुराण में २९० आध्याय हैं। इस पुराण की भाषा अत्यन्त सरल एवं बोधगम्य है। मत्स्यपुराण में अनेक वैदिक मन्त्रों तथा सूक्तों का उल्लेख प्राप्त होता है। मत्स्य और पद्म पुराण के अनेक मन्त्रों में साम्य देखने को मिलता है। इसके वर्ण्य विषयों में सृष्टि वर्णन, मत्स्यावतार, दक्ष की उत्पत्ति, देव-दानव उत्पत्ति, देव-दानव युद्ध, सर्यवंश का विस्तृत वर्णन, पितृ वंश वर्णन, श्राद्धकल्प, सोमवंश का आख्यान, ययाति आख्यान, यदुवंश वर्णन, व्रतों की महिमा, प्रयाग माहात्म्य, मयासुर आख्यान, भूगोल वर्णन, तारकासुर आख्यान, शिव-पार्वती संवाद, नवग्रह शान्ति वर्णन, सावित्री आख्यान, राजधर्म वर्णन, शकुन विचार, वाराहावतार वर्णन, क्षीरोदमंथन, वास्तु यज्ञ विधान, भवन निर्माण विधि इत्यादि वर्णित हैं। इस पुराण में अनेक सुभाषित वर्णित है।

17) **कूर्मपुराण** – पुराणों के क्रम में इसका क्रम पन्द्रहवाँ है। मत्स्यपुराण में इसकी श्लोक संख्या १८००० बताई गई है। पुराणों के वर्गीकरण की दृष्टि से पद्मपुराण ने कूर्म पुराण को तामस पुराण कहा है परन्तु भविष्यपुराण ने ६ राजसपुराणों के अन्तर्गत इसकी गणना की है। स्कन्दपुराण के केदार खण्ड के अनुसार यह शिव महिमा का प्रतिपादन करता है। यह

[18] पुराणविमर्श पृ. १५४

[19] मुख्यं पुराणेषु मात्स्यम्। (वामन १२.४८);

पुराण चार संहिताओं में विभक्त है[20] – १. ब्राह्मी संहिता २. भागवती संहिता ३. सौरी संहिता ४. वैष्णवी संहिता। इन चारों सहिताओं में पुरषार्थ चतुष्टय प्राप्ति के उपाय निर्दिष्ट हैं। इस कूर्मपुराण के आदिवक्ता स्वयं नारायण हैं। इसमें सूत जी की उत्पत्ति, समुद्र मन्थन, कूर्मावतार की कथा, ब्रह्मा का प्रादुर्भाव, भगवान् रुद्र तथा लक्ष्मी का प्रादुर्भाव, चार वर्णों की सृष्टि, चार आश्रम वर्णन, शिवलिङ्ग महिमा, शिव-विष्णु के एकत्व का प्रतिपादन, देवी चरित्र, अन्धकासुर आख्यान, बलि-वामन चरित्र वर्णन, सूर्यवंश वर्णन, चन्द्रवंश वर्णन, जयध्वजवंश वर्णन, क्रोष्टुवंशी राजाओं का वृत्तान्त इत्यादि विषय प्राप्त होते हैं। आध्यात्मिक एवं दार्शनिक दृष्टि से कूर्मपुराण के उत्तरभाग में स्थित 'ईश्वरगीता' का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण स्थान है। पुराणों की वेद के निगूढ अर्थों का स्पष्टीकरण, ज्ञान-कर्म और उपासना के सरलतम विस्तार के साथ कथोपथन के माध्यम से जन साधारण को भी गूढतम विषयों को हृदयङ्गम कराने की जो अद्भुत क्षमता, वह कूर्मपुराण में भी परिलक्षित होती है[21]।

18) **ब्रह्माण्डपुराण** – यह पुराणक्रम में अन्तिम पुराण है। यह राजस पुराण के अन्तर्गत आता है। ब्रह्माण्ड के विषय में स्वयं ब्रह्मा उक्त पुराण को वर्णित करते हैं। अतः इस पुराण का नाम ब्रह्माण्ड पुराण है[22]। इस पुराण का श्लोक परिमाण भिन्न-भिन्न पुराणों में भिन्न-भिन्न है। जैसे श्रीमद्भागवत, नारद, अग्नि एवं ब्रह्मवैवर्तपुराण के अनुसार इसमें १२००० श्लोक हैं परन्तु स्कन्द पुराण के अनुसार १२८०० और देवीभागवत के अनुसार १२१०० श्लोक हैं। ब्रह्माण्डपुराण की कथावस्तु चार पादों में विभक्त है – १. प्रक्रियापाद २. अनुषङ्गपाद ३. उपोद्धातपाद ४. उपसंहारपाद। प्रक्रियापाद में द्वादश-वार्षिक यज्ञ वर्णन, सृष्टि वर्णन, देवासुरोत्पत्ति, योग धर्म, पाशुपत योग, भारतवंश, जम्बू द्वीप वर्णन, गङ्गावतरण नदी वर्णन, वेद विभाग वर्णन इत्यादि अनेक विषय बताए गए हैं। मध्यभाग में प्रजापति वंशानुकीर्तन, श्राद्धकल्प, दानफल, गयाश्राद्ध वर्णन, मिथिला वंश वर्णन, भागर्व चरित, देवासुर कथा, भविष्य कथा, विष्णु माहात्म्य एवं भविष्य राज वंश वर्णन प्रमुख है। उत्तरभाग में चौदह मनुओं का वर्णन, भविष्यमनुओं का वर्णन, चौदह लोक का वर्णन, मनोमयपुराख्यान, गुणों के अनुसार जन्तुओं की गति का वर्णन इत्यादि वर्ण्य विषय है। इस पुराण के विषयों को समझाने के लिए अनेक आख्यान और उपाख्यानों को भी अङ्गीकृत किया गया है।

इस प्रकार से सभी अठारह पुराणों का संक्षिप्त परिचय समाप्त हुआ।

2.3 पुराणों की ऐतिहासिक सङ्कल्पना

2.3.1 पुराणों का ऐतिहासिक महत्त्व

जिस पुराण शब्द का पर्याय इतिहास उसका ऐतिहासिक महत्त्व नाम से ही सिद्ध हो जाता है। पुराणों में ऐसी ऐतिहासिक घटनाएँ हैं जो वर्तमान में दर्पण का कार्य करती हैं। प्राचीनकाल से इतिहास पुराणशब्द से प्राचीन कथा अर्थ ही लिया जाता था। सायण ने भी अथर्व वेद भाष्य में पुराण शब्द का अर्थ पुरातन वृत्तान्त कथन रूप आख्यान किया है। किन्तु सायण के पूर्व **'इति**

[20] कूर्मपुराण (पूर्वार्द्ध १.२१-२२);

[21] संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास: बलदेव उपाध्याय (त्रयोदश भाग, पृ. ५११)

[22] ब्रह्मा ब्रह्माण्डमाहात्म्यमधिकृत्याब्रवीत् पुनः। (मत्स्य पुराण ५३.५४)

ह आस' इस व्युत्पत्ति के आधार पर भूतकालीन कथा को इतिहास कहा है। शौनक ने भी पुरातन वृत्तान्त को इतिहास कहा है[23]। कौटिल्य इतिहास के अन्तर्गत पुराण को मानते हैं –

'पुराणमितिवृत्तमाख्यानकोदाहरणं धर्मशास्त्रं चेतिहासः'[24]**।**

ब्राह्मण आदि प्राचीन ग्रन्थों में कथा के अर्थ में आख्यान, आख्यायिका, अन्वाख्यान आदि शब्दों का प्रयोग मिलता है। इन सबको आधार मानकर महर्षि व्यास ने पुराणसंहिता की रचना की है। विष्णुपुराणयके अनुसार –

'आख्यानैश्चाप्युपाख्यानैर्गाथाभिः कल्पशुद्धिभिः।
पुराणसंहिता चक्रे पुराणार्थविशारदः'[25]**॥**

इन आख्यान, उपाख्यान गाथा एवं कल्पशुद्धियों के द्वारा भगवान वेदव्यास ने पुराणों की रचना की[26]। इन सब बातों से यह स्पष्ट हो जाता है कि आख्यान और उपख्यानों के माध्यम से ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से पुराणों में सजोया गया है। पुराणों में ऐतिहासिक राजवंश, ऐतिहासिक संसार की स्थिति का वर्णन, इतिहास में किस प्रकार की राजनीति थी? किस प्रकार की नीति थी? इन सब बातों पर प्रकाश पुराणों से ही प्राप्त होता है।

2.3.2 पुराणों की ऐतिहासिक सङ्कल्पना

इस हिस्से का शीर्षक है 'ऐतिहासिक सङ्कल्पना' अर्थात् पुराणों की ऐतिहासिक धारणा। जैसे पहले भाग में स्पष्ट किया जा चुका है कि इतिहास अर्थ पुराण का ही पर्याय है। अतः यह स्पष्ट है कि पुराण हमारे लिए हमारी संस्कृति तथा अतीत को जानने के लिए दर्पण का कार्य करते हैं। इसमें ऐतिहासिक घटनाओं के माध्यम से हमको ज्ञान कराया जाता है। प्रश्ना आता है पुराणों के प्रति ऐतिहासिक धारणा क्या है? तब उत्तर देते हैं कि पुराण और इतिहास एक दूसरे के पर्याय शब्द हैं पर ऐसा क्यों? पुराणों में आख्यान, उपख्यानों, गाथा और कल्पशुद्धि के माध्यम से इतिहास की जानकारी दी जाती है जो कि ऐतिहासिक धारणा का कारण है क्यों कि इन सब के माध्यम से इतिहास को हमारे सामने रखा जाता है। विष्णु पुराण की श्रीधरी टीका में आख्यान एवं उपाख्यानों में भेद दर्शाया गया है –

'स्वयं दृष्टार्थकथनं प्राहुराख्यानकं बुधाः।
श्रुतस्यार्थस्य कथनमुपाख्यानं प्रचक्षते'[27]**॥**

अर्थात् स्वयं के द्वारा अनुभूत दृष्ट घटनाओं का वर्णन आख्यान एवं अन्य से सुनी हुई घटनाओं का वर्णन उपाख्यान होते हैं। परन्तु सामान्य अर्थ में मुख्य विषयवस्तु आख्यान है एवं तदन्तर्गत वर्णित लघुकथाओं को उपाख्यान कहते हैं जैसे रामायण में रामकथा आख्यान एवं अहल्या सुग्रीवादि प्रसंग उपाख्यान हैं। इसी तरह महाभारत में युधिष्ठिर का राज्याभिषेक आख्यान एवं नलदमयन्ती कथा उपाख्यान हैं। अब प्रश्न आता है गाथा किसे कहते हैं और यह कैसे ऐतिहासिक सङ्कल्पना को बताती है? किसी भी ऐतिहासिक अथवा पौराणिक वीर पुरुषों की यशःकथा वर्णन ही गाथा है जिसे ऋग्वेद तथा शतपथ ब्राह्मणों में नाराशंसी कथाओं को गाथा

[23] इतिहासः पुरावृत्तम् ऋषिभिः परिकीर्त्यते। (बृहद् देवता ४/४६);
[24] कौटलीय अर्थशास्त्र (१/५/१३);
[25] विष्णुपुराण (३/६/१५);
[26] विस्ताराय तु वेदानां स्वयं नारायणः प्रभुः। व्यासरूपेण कृतवान् पूराणानि महीतले। (ब्रह्मपुराण १/१५);
[27] विष्णुपुराण (श्रीधरी टीका ३/६/१५);

कहते हैं[28]। ऐतरेय ब्राह्मण ईश्वरीय रचना को ऋक एवं मानव कृत रचना को गाथा मानता हैं[29]। इसमें अनेक गाथायें उद्धृत हैं। अतः इन पुराणों में विशेषतः महापुरुषों की वीरता, दानशीलता एवं शौर्य की गाथाएँ वर्णित है। जो ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित हैं जो हमको ऐतिहासिक दर्पण प्रदान करती हैं। इन आख्यान, उपाख्यान, गाथा और कल्पशुद्धियों के द्वारा समस्त पुराणों की रचना की गई है जो सभी ऐतिहासिक सङ्कल्पना को बताते हैं। और जो पुराणों के पाँच लक्षण है (सर्ग, प्रतिसर्ग, वंश, मन्वन्तर और वंशानुचरित) यह सभी ऐतिहासिक जानकारी ही हमको प्रदान करते हैं। ऐतिहासिक वंशों के बारे में, सभी वंशों से सम्बन्धित ऐतिहासिक घटानाओं के बारे हमको जानकारी पुराणों से ही प्राप्त होती है। पुराणों का ऐतिहासिक महत्त्व हर नजर से है चाहे वह धर्म की ऐतहासिकता हो, चाहे किसी राज वंश की ऐतिहासिकता हो, चाहे वह सृष्टि वर्णन हो, चाहे भुवनकोश वर्णन हो यह सभी विषय हमको पुराणों प्राप्त होते हैं। सभी अठारह पुराणों में ऐतिहासिक सामग्री तो प्राप्त होती ही है परन्तु कुछ पुराण में भविष्य की सामग्री भी प्राप्त होती है। पुराणों को वेद का चक्षु कहा जाता है अतः पुराण वैदिक काल और उत्तरवैदिक काल की जानकारी तो हमको प्रदान करते ही हैं साथ में लोकाचार, लोकव्यवहार तथा लैकिक घटनाओं को हमारे सामने रखते हैं। इनमें उदाहरणों और दृष्टान्तों के माध्यम से ऐतिहासिक सामग्री को हमारे सामने सरल तरीके से बताया गया है।

2.4 सारांश

पुराण के इस भाग को पढकर हमको सभी अठारह पुराणों की संक्षिप्त जानकारी हो जायेगी तथा उन सभी से सम्बन्धित जो भी वर्ण्य विषय है उन पर भी प्रकाश पडेगा। सभी पुराणों के विषय में सामान्य रूप से ज्ञान होना प्रत्येक भारतवंशी के लिए आवश्यक है जो कि इस भाग से हो जायेगा तथा पुराणों की ऐतिहासिक सङ्कल्पना क्या है उन सभी पुराणों का महत्त्व क्या है इन सभी विषय पर प्रकाश इस भाग में डाला गया है। पुराण एक ऐसा सागर है जिसमें हमको हर प्रकार ज्ञान मिल जाता है चाहे वह व्यावहारिक ज्ञान हो, धार्मिक ज्ञान हो, ऐतिहासिक ज्ञान हो, सांस्कृतिक ज्ञान हो, नैतिक ज्ञान हो, संरचनात्मक ज्ञान हो या किसी भी प्रकार का शैक्षिक ज्ञान हो। सभी पुराणों को संक्षिप्त रूप से इस भाग में बताया गया है। जिसको पढकर सभी पुराणों का जाना जा सकता है तथा साथ में यह भी समझा जा सकता है कि पुराणों का ऐतिहासिक महत्त्व क्या है। धार्मिक परम्परा में वेद के पश्चात् पुराण की ही मान्यता है। इसके महत्त्व का आकलन इस कथन से भी किया जा सकता है कि अङ्गों सहित वेदों का अध्ययन करने वाला भी द्विज पुराण ज्ञान के बिना विचक्षण नहीं हो सकता[30]। पौराणिक ज्ञान की छाया में ही वैदिक साहित्य का अर्थबोध सम्भव है। वेद संक्षिप्त सूत्ररूप है और पुराण उसकी व्याख्या प्रस्तुत कर मानवीय जीवन में उसकी उपयोगिता को बताता है। वस्तुतः पुराण रूपी पूर्णचन्द्र से वेदों की ज्योत्स्ना ही प्रकाशित होती है। वेदों का तत्त्व (सार) ही पुराणों में कथात्मक रूप को ग्रहण करता है। सभी पुराणों का ऐतिहासिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा भौगोलिक दृष्टि से अत्यन्त महत्त्व है। पुराणों में प्रकृति रूप से आध्यत्मिक तत्त्व एवं हिन्दू देवी-देवताओं की विलक्षण विभूतियों का वर्णन किया गया है। अतः प्रत्येक पुराण को जानना और समझना प्रत्येक मनुष्य का कर्त्तव्य है। इस भाग से सभी पुराणों को जानें और समझें।

---

[28] नाराशंस्यो गाथा (१०/५/६/८);

[29] ऐतरेय ब्राह्मण (७/१८);

[30] यो विद्याच्चतुरो वेदान् साङ्गोपनिषदो द्विजः।
न चेत्पुराणं संविद्यान्नैव स स्याद् विचक्षणः॥ (वायुपुराण १.१.१००)

2.5 सन्दर्ग्रन्थ सूची

१. शतपथ ब्राह्मण।

२. संस्कृत वाङ्मय का बृहद् इतिहास, बलदेव उपाध्याय, भाग – त्रयोदश, उत्तरप्रदेश संस्कृत संस्थान लखनऊ – २०००।

३. संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, उमाशंकर ऋषि, चौखम्भा भारती आकादमी, वाराणसी – २०१९।

४. पुराणविमर्शः, बलदेव उपाध्याय।

५. श्रीमद्भागवत्पुराण, विष्णुपुराण, मत्स्यपुराण, वायुपुराण, गरुडपुराण, नारदपुराण एवं अन्य सभी महापुराण गीताप्रेस गोरखपुर।

६. निरुक्त, यास्कप्रणीत।

७. धर्मशास्त्र का इतिहास, पी.वी.काणे।

2.6 बोध प्रश्न

१. पुराण कितने हैं एवं उनके नाम क्या-क्या हैं सक्रम बताइये?

२. पुराणों के ऐतिहासिक महत्त्व पर एक निबन्ध लिखिए?

३. विष्णुपुराण एवं श्रीमद्भागवतपुराण का संक्षिप्त परिचय लिखिए?

४. ब्रह्माण्डपुराण तथा ब्रह्मपुराण के वर्ण्य विषय पर प्रकाश डालिए?

५. अठारह पुराणों का परिचय दीजिए(प्रत्येक पुराण के विषय में तीन-तीन पङ्क्ति लिखें)?